International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 102-104

# गोस्वामी तुलसीदास की प्रासांगिकता

**Nitu Gupta**

Research Scholar Department of Hindi, Jharkhand Rai University, Ratu Road Kamre, Ranchi, Jharkhand, India

## प्रस्तावना

अधिकांश साहित्यिक कृतियाँ कालगत विशेषताओं के समाप्त होते ही अप्रासांगिक हो जाती है। अतीत के अंधकार में खोने का मुख्य कारण रचनाकार का सीमित अनुभव, विश्व चेतना का अभाव, इतिहास बोध की कमी और शाश्वत जीवन मूल्यों से अपरिचय है। परंतु कुछ कृतियाँ अपनी समृद्धि और अभिव्यक्ति सामर्थ्य में इतनी महान होती है की कालजयी बन जाती है और अनंत काल तक अपनी प्रासांगिकता को बनाए रखती है। ऐसी ही एक कृति है गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस'। इस कृति में गोस्वामी जी ने जिस जीवन सत्य को उद्घाटित या निरूपित किया है वे सार्वकालिक सत्य के रूप में अभिव्यक्त होता है। उन्होने अपने राम के व्यक्तित्व को जिस समष्टिवादी दृष्टि और समग्रता के साथ प्रस्तुत किया है, वह विश्व साहित्य का अन्यतम उदाहरण है। "रामचरित' के माध्यम से जनता के हृदय को छूकर प्रेम और विस्वास की सरस धारा प्रवाहित की। उन्होने संनव्य की जो साधना की, उसमें विचार तत्व की गहनता, भावना की मार्मिकता तथा विश्वास की दृढ़ता की त्रिवेणी का संगम दृष्टिगत होता है।"[1]

गोस्वामी जी उच्च कोटि के भक्त कवि ही नहीं बल्कि सच्चे इतिहासकर, कुशल राजनीतिज्ञ और विचारों के सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषक भी थे। उनका आविर्भाव ऐसे समय में हुआ था जब हर क्षेत्र में विषमता, द्वेष और वैमनस्य व्याप्त था। ऐसे विषम वातावरण में गोस्वामी जी ने समन्वय के माध्यम से लोकमंगल का विधान किया। आचार्य हजारी प्रसाद द्वेदी ने तुलसीदास को गौतम बुद्ध के बाद भारत का सबसे बड़ा लोकनायक कहा था। लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके। तुलसी का सम्पूर्ण काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है। उन्होने धर्म, दर्शन, भक्ति, परिवार एवं साहित्य के क्षेत्र में समन्वय का प्रयास किया है। उन्होने शैव और वैष्णव का का समन्वय, वैष्णव और शाक्त का समन्वय,ज्ञान और भक्ति का समन्वय, अद्वेत्त और विशिष्टद्वेत्त का समन्वय, राजा और प्रजा का समन्वय, नर और नारी का समन्वय अपने काव्य में किया है। "वर्तमान समय में हमारा समाज वर्णो और वर्गो में बाँटा हुआ एक विखंडित समाज बन गया है। इसमें ऊँच नीच, अमीर गरीब, शासक -शासित का भेद बढ़ता ही जा रहा है। ऐसे विषम परिवेश में तुलसी कृत मानस के अनुशीलन से अनेकता में एकता के तत्वों को पहचाना जा सकता है और विखंडित समाज को अखंड भारत के आदर्श से जोड़ा जा सकता है।"[2]

आज का मानव समाज जिन विसंगतियों और विडंबनाओं का कामना कर रहा है, उनसे निजात पाने के लिए तुलसी दास का काव्य रामचरित मानस विशेष रूप से प्रासंगिक है।समाज मे आज चारों ओर विषमता, अराजकता, अशांति पाखंड, विद्वेष, आडंबर, आतंक, विभेद, शोषण आदि अमानवीय तत्वों का विस्तार होता जा रहा है एक मनुष्य दूसरे के प्रति घृणा से परिचालित है। "पेट की आग को शांत करने के लिए ऊँचे-नीचे कर्म तथा धर्म अधर्म का आश्रय लेने को बाध्य होना पड़े, तो क्या आश्चर्य ? ऐसी दशा में जनता का नैतिक स्तर गिर जाना भी स्वाभाविक है। जीविका को साधन की उपलब्धि की अभाव में जन-जन किंकर्तव्यविमूढ़ बना हुआ था, जिसका वर्णन तुलसी ने इन शब्दो में किया।"[3]

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बणिक को बनिज न, चाकर को चाकरी।

जीविका-बिहीन लोग,सदविमान सोचबस,
कहै एक एकन सों 'कहाँ जाई का करी ?'।।[4]

भारत वर्ष में ही नहीं पूरे विश्व में भावनात्मक एकता की कमी महसूस की जा रही है जिसके कारण मानस की प्रासंगिकता और बढ़ गई है। गोस्वामी जी ने रामराज्य की कल्पना द्वारा "ना ही दरिद्र कोई दु;खी ना दीना" का आदर्श प्रस्तुत किया है। सभी प्रकार के दु;खो से मुक्ति का तुलसी के रामराज्य में गंभीर रचनात्मक आश्वासन है।

"रामचरित मानस मानव जीवन का विज्ञान है। इसमें समस्त मानव जीवन के आचार -विचार, रहन सहन,परिवार,राज्य और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों का विशद -गूढ़ एव व्यापक प्रकाश डाला गया है"[5] गोस्वामी जी ने इस ग्रंथ की रचना ' सर्वजन हिताय'की है। उनके समकालीन कवि ' परानतः सुखाय' साहित्य का सृजन कर रहे थे, क्योंकि वे राज्यश्रित दरवारी कवि थे और उन्हें अपने आश्रयदाताओं की झूठी प्रशंसा मे लिप्त साहित्य की रचना करनी पड़ती थी। तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना राज्यश्र्य से विरक्त होकर 'सर्वजन सुखाय -सर्वजन हिताय की। सब के भला में हमारा भला के वह अनुगामी थे। जब तक समाज में सभी को समानता का अधिकार प्राप्त नहीं होगा और मानव -मानव के प्रति प्रेम भावना नहीं होगा, तब तक मानस प्रासंगिक रहेगा।

"गोस्वामी जी ने जिस राम का आदर्श सामने रखा है वह विशिष्ट है। राम सब प्रकार के क्षुद्रततवों से मुक्त स्वार्थ संबंधो से ऊपर उठे हुए आदर्श का नाम है। वे परम उदार और परदु;खकातर हैं। प्रजा वात्सल्य एव दीनों के उद्धारकर्ता हैं। शासक के रूप में ऐसे राजा की अनिवार्यता हर युग को रहेगी। सनातन काल तक मानव समाज राम जैसे शासक की प्रतिक्षा करता रहेगा। मानस की प्रासांगिकता आज के मानव समाज में इस दृष्टि से भी है की वह धार्मिकता के सच्चे स्वरूप को उजागर करता है, विशेषतः हिन्दू समाज अनेक कुरीतियों को प्रश्रय दे रहा है"[6]

कुछ लोग गोस्वामी जी को नारी एव शूद्रों के प्रति निष्ठुर और असंवेदनशील मानते हैं। वे वस्तुतः बड़े भारी भ्रम के शिकार है। तुलसीदास जी ने भारतीय नारी को उसकी समूची गरिमा और ऐश्वर्य के साथ सीता, अनुसूइया जैसी नारियों में प्रतिष्ठित किया है। वे लिखते है -

"कृत विधि सृजि नारी जग माही। पराधीन सपनेहु सुख नाही।"

अर्थात ना जाने किस विधाता ने नारी का सृजन किया है जो पराधीन है और पराधीन होने के कारण सपने में भी उन्हे सुख नहीं मिलता।[7] नारी के प्रति तुलसी की इस चिंता से ये ज्ञात होता है कि गोस्वामी जी नारियों के प्रति कितना संवेदनशील रहे है। जब तक इस पुरुष प्रधान देश मे नारी पर अत्याचार, शोषण,दुर्व्यवहार होते रहेंगे या वे पराधीन रहेगी तब तक मानस प्रासंगिक रहेगा।

तुलसीदास जी राजनीति के ही पंडित न थे, वह कट्टर क्रांतिकारी समाज सुधारक भी थे। उनके समय में कर्मकांड और ब्राम्हणवादप्राबल्य पर था। शूद्रों कि दशा सोचनीय थी। उन्हे वेद और उपनिषद पढ़ने का अधिकार न था, उनके हरि मंदिर प्रवेश पर बावेला मच जाता था। तुलसी जी ने इसके विरोध में आवाज उठाई और लोकमंगल कि स्थापना तथा उदार मूल्यों कि ओर सबका ध्यान केन्द्रित करना चाहते थे। वे एक ऐसी व्यवस्था कायम करने के पक्ष में थे जिसमें न तो शोषण हो, न अन्याय हो, न अपहरण हो और न संघर्ष हो। ऐसे ही समाज की स्थापना की मनोकामना करते हुए उन्होने मानस की रचना की। उन्होने कहा है की राजा को मुखिया के समान होना चाहिए। जिस प्रकार मुख अपने शरीर के सभी अंगो का पालन करता है, उसी प्रकार राजा को अपने समस्त प्रजा का पालन करना चाहिए। उसका एक मात्र कर्तव्य ह प्रजा को सम्पन्न और सुखी रखना।

मुखिया मुख सो चाहिए खान -पान कहूँ एक,
पालई-पोषई सकल अंग तुलसी सहित विवेक। [8]

संक्षेप में हम कह सकते है कि आज के समाज में तुलसी का काव्य अधिकांश रूप में प्रासांगिक है। सामाजिक न्याय, नारी कि प्रतिष्ठा, समाज को

मुख्यधारा में लाने का प्रयत्न अधिक से अधिक रचनात्मक हो सके एवं शांति व स्नेह के साथ हमारा समाज प्रगति के पाथ पर निर्भय हो कर आगे बढ़े इसके लिए तुलसी कृत 'रामचरितमानस' का आध्ययन अनिवार्य ही नहीं अपरिहार्य है।

**संदर्भ**


1. तुलसी : साहित्य और साधना, डॉ॰ इन्द्रपाल सिंह **'इन्द्र'**, प॰ 190, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्रथम संस्करण, वर्ष-1974
2. http://www.abhivyakti-hindi.org/snibandh/drishtikone/**2012/**tulsi_ka_ramraj.htm
3. तुलसी : साहित्य और साधना, डॉ॰ इन्द्रपाल सिंह **'इन्द्र'**, प॰ 24, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्रथम संस्करण, वर्ष-1974
4. कवितावली-97, तुलसीदास
5. https://krantiswar.wordpress.com /2011/08/05/तुलसी-दास-की-प्रासंगिकता/
6. http://www.abhivyakti-hindi.org/snibandh/drishtikone/2012/tulsi_ka_ramraj.htm
7. सम्मेलन पत्रिका (भाग -97 संख्या-4), प। 186, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग,इलाहाबाद-3, वर्ष 2012(ओक्टोबर -दिसम्बर )
8. रामचरितमानस, 2-315, तुलसीदास